लेखक की पुस्तक
"अंधविश्वास सत्य और तथ्य"
का मूल सार-संक्षेप

रत्न विज्ञान पूर्णतया वैज्ञानिक है

आयुर्वेद ने जड़ी-बूटियों के समान रत्नों को भी रोग शमन में उपयोगी माना है। रत्नों का मनुष्य पर अनुकूल अथवा प्रतिकूल प्रभाव विभिन्न रंगों पर आधारित है। यह पूर्णतया वैज्ञानिक है। इसीलिए आभूषण के रुप में पहनने के साथ रत्न द्वारा भाग्यशाली प्रभाव पाने के लिए भी लगभग प्रत्येक देश में पहना जाता है। रत्न का अनुकूल अथवा प्रतिकूल प्रभाव इस बात पर भी निर्भर करता है कि उनका उचित चयन किया गया है अथवा नहीं। यह कार्य सुनार अथवा एक रत्न विक्रेता कदापि नहीं कर सकता। इसके लिए लम्बी गणनाएँ करनी पड़ती हैं जो दोनों वर्गो के लिए उचित ज्ञान के अभाव में संभव नहीं हैं। रत्न का उचित चुनाव न हो पाने के कारण व्यक्ति को उसका लाभ भी नहीं मिल पाता और इसीलिए इस विज्ञान को अंधविश्वास, ठगी, हास्यासपद आदि की श्रेणी में रख दिया जाता है।

यदि रत्न विज्ञान मिथ्या होता तो मुझे इसके प्रयोग से अस्सी प्रतिशत से भी अधिक संतोषजनक प्रमाण नहीं मिलते। अब तक मैं हजारों की संख्या में रत्न देश-विदेश में विभिन्न लोगों पर परख चुका हूँ। रत्न के लिए मुख्य और सर्वाधिक प्रभावशाली बात यह है कि उसे किस दिन, समय और नक्षत्र अथवा अन्य शुभ महूर्त में प्रयोग किया जाए ताकि उसका अधिकाधिक सुफल धारण करने वाले को मिल सके। इसका विस्तृत विवरण मैं अपनी पुस्तक "स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न" में कर भी चुका हूँ। पाठक स्वयं अनुभव करेंगे कि रत्न को सर्वाधिक प्रभावशाली बनाने वाली मेरी यह पद्धति विश्वभर में अपनी तरह की अलग और सर्वाधिक सरलतम है।

सूर्य की किरणों को जब प्रिज्म से निकलने दिया जाता है तो वह किरण सात रंगों में दिखाई देती है। इसको यदि पर्दे पर लिया जाए तो यह सात रंग निश्चित क्रम में देखे जा सकते हैं। रंगो का यह क्रम है - बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल। यह रंग कैसे दिखाई देते हैं, यह समझ लिया जाए तो रत्न विज्ञान सरल हो जाएगा। किसी भी वस्तु के रंग का हमें प्रकाश से ही आभास होता है। जिस रंग या रंगों की वस्तु होती है, सूर्य प्रकाश किरण का वह रंग उस में समाहित नहीं हो पाता जबकि उस रंग के अलावा सब रंग उसमें समाहित हो जाते है। परावर्तन के नियम से जब समाहित न होने वाले रंग की किरण हमारी ऑख तक पहुँचती है तो हमें यह रंग प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए कोई नीले रंग का फूल किरण के छः रंग तो अपने में समाहित कर लेगा। सातवॉ नीला रंग हमारी ऑख में पड़ेगा और हमें फूल नीला प्रतीत होगा।

हमारे ग्रहों के भी सात रंग हैं, यह सिद्ध किया जा चुका है। सूर्य का रंग नारंगी है। चंद्रमा का श्वेत, मंगल का लाल, बुद्ध का हरा, गुरु का पीला, शुक्र का श्वेत और शनि का काला रंगा है। काले रंग का अर्थ है रंगों का अभाव। यह रंग अन्य रंगों को अपने अंदर समेट लेता है। यह कोई भी रंग बाहर नहीं फेंकता। शनि भी इसी गुण कारण रंग अपने में लेता ही लेता है, देता नहीं। इसीलिए शनि के दुष्प्रभाव के लिए दान देने की ही प्रथा है।

विभिन्न रंगों के होने के कारण किसी ग्रह विशेष का यह रंग बाहर फेंक देते हैं। रत्न का फोकस जितना उत्तम तराशा गया होगा, रंग विशेष का गुण उतना ही अधिक व्यक्ति के उंगली, गले, माथे आदि में छूते रहने के कारण उसमें प्रवेश करेगा। पहले घरों की खिड़कियों में रंग-बिरंगे कॉच इसी उद्देश्य से लगवाए जाते थे कि कॉच के रंगों वाली रश्मियॉ अपने गुण विशेष से घर को प्रभावित करती रहें। जल चिकित्सा का भी यही सिद्धांत है। जो गुण दोष सूर्य की रश्मियों में विभिन्न रंगों के कारण होते हैं, वह उस रंग की कॉच की बोतल द्वारा उसमें भरे शुद्ध जल में उत्पन्न करवाये जाते हैं। यह जल औषधि का कार्य करता है। शरीर में उस रंग से सम्बन्धित क्षति को यह पूरा करता है।

प्रश्न यह उठता है कि जब विभिन्न रंगों के सस्ते कॉच से कार्य चल सकता है तो महॅगें और दुर्लभ उन्हीं रंगों के रत्न क्यूँ लिए जाऍ? कॉच में भी तो रश्मियों को आत्मकेन्द्रित करने का गुण निहित है।

रत्न पूर्णतया विभिन्न रसायनों के एकत्रित होने से प्राकृतिक रुप से अन्य खनिज लवणों की तरह अरबों-खरबों वर्षों में बनतें हैं। रत्नों का बनना रसायनिक क्रिया है। यह

पूर्णतया वैज्ञानिक है, यदि अप्राकृतिक रुप से अणुओं को एक स्थान पर ऐसे ठूँस-ठूँस कर भर दिया जाए, जहॉ वह चारों ओर हिलडुल सकें तो रत्न निर्मित किए जा सकते हैं। सॉलिड स्टेट (सेमी कण्डक्टर) इलैक्ट्रानिकी सिलिकॉन और जर्मेनियम में जो शुद्ध रुप से विद्युत का कुचालक है, दस लाख अणुओं के पीछे एक अणु दूसरे विशेष तत्व को मिला देने पर भी विद्युत धारा के अर्धसंचालक बन जाते हैं अर्थात् इनमें एक ही दिशा में करेंट प्रवाहित हो सकता है। विपरीत दिशा में करेंट का बहना सम्भव नहीं है।

इस एक सिद्धांत ने, जिसमें दस लाख अणुओं के पीछे सूक्ष्म एक अणु इसके तत्व को मिलाया जाता है, पूरे इलैक्ट्रानिकी क्षेत्र में नई क्रान्ति ला दी है। यह समस्त प्रक्रिया सूक्ष्म स्तर पर ही संभव है। यह परिकल्पना ही सूक्ष्मवाद के अस्तित्व और महत्व को बल प्रदान कर रही है। रंगों को ठूँस-ठूँस कर भरे हुए अणुओं के कारण निरन्तर तीव्र कंपन होता है। प्रभाव में यह रेडियो प्रसारण की तरह प्रत्येक पल अच्छे और बुरे प्रभाव प्रसारित करते रहते हैं। रंगों के प्रभाव से रत्न शरीर के क्षीण हुए रंग प्रभाव में संतुलन स्थापित किए रहते हैं। शरीर के अनुकूल अथवा कहें कि किसी रंग विशेष की कमी वाले रंग को शरीर में इनके द्वारा समाहित किया जाता है।

इस प्रक्रिया से शरीर और प्रयोग किए गये रत्न और दुष्प्रभाव देने वाले ग्रह के रंग स्पंदनों में सामंजस्य स्थापित होने लगता है। रंगों के अतिरिक्त पीज़ो और फोटो इलैक्ट्रिक प्रभाव द्वारा भी रत्न प्रभाव डालते हैं। पीज़ो प्रभाव अर्थात् दबाव से भी इनमें इलैक्ट्रो मैग्निटिक प्रभाव होता है, यह सिद्ध किया जा चुका है। धीरे-धीरे उस ग्रह का प्रतिकूल प्रभाव घटने लगता है और जनसाधारण की भाषा में इस अनुरुप परिणाम को रत्नों द्वारा चमत्कार की संज्ञा दी जाने लगती है। दूसरी ओर अज्ञानतावश रत्नों का उचित

चुनाव न हो पाने के कारण और उनके प्रयोग विधि, उँगली आदि में प्रयोग को लेकर अज्ञानता के कारण यदि रत्न प्रभावहीन रहें तो इसे ठगी और अंधविश्वास की श्रेणी में रख दिया जाता है।

साधारण कॉच में अणु ठूँस-ठूँस कर नहीं भरे होते इसलिए उनका भौतिक और रासायनिक गुण रत्नों जैसा नहीं होता। इसीलिए रंगों को अपने अंदर ग्रहण करने का गुण भी उनमें नगण्य होता है।

किस उँगली में कौन सा रत्न पहनें? जब तक इसका विज्ञान को नहीं समझा जाएगा तब तक रत्न विज्ञान अंधविश्वास ही लगेगा। इसका विस्तृत वैज्ञानिक आधार मैंने इसीलिए रत्नों वाली पुस्तक में दे दिया है ताकि बौद्धिक वर्ग इसे मनन और प्रयोग कर उचित लाभ प्राप्त कर सकें।

gopalraju

लेखक की पुस्तक
‘‘अंधविश्वास सत्य और तथ्य”
का मूल सार-संक्षेप

gopal raju

भविष्यवाणी

आज भारत के साथ-साथ पूरे विश्व भर में भविष्य को लेकर जिज्ञासा भरी हुई है। आए दिन पत्र-पत्रिकाओं में निकलने वाले भविष्यफल पाठकों के लिए सर्वप्रथम पठनीय और सर्वाधिक जिज्ञासापूर्ण विषय होते हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार विश्व जनसंख्या का 75 प्रतिशत से भी अधिक भाग प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से भविष्यवाणी में इच्छुक रहता है। वर्षों मेरा जीवन कट्टरपंथी आर्य समाजियों के मध्य बीता है। उनमें भी मैंने इस विषय के प्रति जिज्ञासा देखी है। सैकड़ों ऐसे लोगों की मैंने जन्मपत्रियॉ बनायी हैं अथवा रत्न और पूजादि प्रयासों से उन्हें लाभ भी पहुॅचाया हैं। आज अनेक कट्टर आर्य समाजी मेरा अनुसरण कर रहे हैं। दो-चार को छोड़ कर लगभग सब लोग यह मानने को विवश हुए हैं कि विषय में कुछ विलक्षणता है अवश्य। उनमें से दो-चार जो न मानने वाले लोग हैं वह केवल इसी बात तक अडिग है कि छः शास्त्रों में से एक ज्योतिष शास्त्र

भी है। और उसका अर्थ है ग्रह, नक्षत्रों की आकाशीय स्थिति। वह यह नहीं मानते कि मानव जीवन अथवा अन्य जीव ग्रह-नक्षत्रों से प्रभावित होते हैं। वह ज्योतिष को पूर्णतया अंधविश्वास बताते हैं।

भविष्य जानने के अनेक तरीके हैं जैसे सामुद्रिक विज्ञान, अंक विज्ञान, ज्योतिष आदि। सामुद्रिक शास्त्र में चेहरा देखकर, शरीर में उपस्थित तिलों से, हाथ और पैर की रेखाओं से, शरीर के विभिन्न अंगों आदि से भविष्यवाणी की जाती है। सामुद्रिक शास्त्र में सर्वाधिक लोकप्रिय और वैज्ञानिक हस्त रेखा विज्ञान है। जो पाठक इस विषय का वैज्ञानिक पहलू विस्तार से अध्ययन करने में इच्छुक हो वह मेरी पुस्तक **हस्त रेखाओं से रोग परीक्षण** अवश्य पढ़ें। उनकी जिज्ञासा अवश्य शान्त होगी।

हमारा मस्तिष्क शरीर के विभिन्न अंगों का संचालन करता है। यह बात सिद्ध की जा चुकी है कि शरीर में किसी अवयव का संचालन मस्तिष्क का कौन-सा भाग करता है। यदि मस्तिष्क का वह भाग किन्हीं कारणों से कार्य करना बंद कर दे तो उससे संबन्धित भाग भी कार्य करना बंद कर देता है। मस्तिष्क के विभिन्न भागों का संबंध व्यक्ति की आकांक्षाओं, काम-प्रवृत्तियों, इच्छाओं आदि पर भी होता है। इसी कारण से शरीर-लक्षण विशेष रुप से हस्त रेखाओं द्वारा व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं का भी पता चल जाता है। सामुद्रिक शास्त्र का संबंध नक्षत्र, पृथ्वी तथा उसके निवासियों पर उनके प्रभाव तथा उनकी दूर स्थित आभा से निकलने वाली चुम्बकीय द्रव धारा से है। हमारा स्नायु तंत्र मस्तिष्क तथा हथेली के मध्य एक कड़ी का कार्य करता है और यह दोनों सूक्ष्मतम संवेदनाओं के भंडारागार हैं।

चिकित्सा विज्ञान मानता है कि गर्भावस्था से ही बच्चा मुट्ठी बंद किए रहता है, इसलिए हथेली की त्वचा सिकुड़ने से उसमें रेखाएं बन जाती हैं। यह स्वाभाविक है और प्राकृतिक भी। परंतु यह धारणा मिथ्या है। यदि ऐसा होता तो रेखाओं का क्रम व्यवस्थित नहीं होता।

नाखून, त्वचा का रंग, नाखून में उपस्थित चन्द्र स्थिति आदि का अध्ययन कर रोग बताने का उपक्रम करते आपने वरिष्ठ चिकित्सकों तक को देखा होगा। विषय वस्तु को अधिक न बढ़ाते हुए यही कहूँगा कि वक्तव्यों की सत्यता की परख स्वयं करके देखिए। दस अनपढ़ व्यक्तियों के हाथ के छापे लीजिए और दस बौद्धिक पढ़े-लिखों के। दस बीमारों का अध्ययन करिए और दस स्वस्थ लोगों का। दस काल्पनिक और हीन भावना से पीड़ित लोगों के छापे देखिए और दस व्यवहारिक और मस्त लोगों के। इसी प्रकार दस-दस के समूह बना कर विभिन्न प्रकार के हस्त रेखाओं के छापे जमा करके अध्ययन करिए और स्वयं निष्कर्ष निकालिए। आप उनमें स्वयं ही अंतर पाने लगेंगे। आप मुझे अपने हाथ की छाप दे दीजिए, मै आपका व्यक्तित्व बता दूँगा। आपका अतीत बता दूँगा।

भविष्यवाणी की दूसरी विधि है अंक विज्ञान। आपने यह अवश्य अनुभव किया होगा अथवा किसी अन्य के लिए पढ़ा-सुना होगा कि उसका जीवन किस प्रकार से एक अंक विशेष के चारों ओर घूमता है। इस विषय को विस्तार से पढ़ने और व्यवहार में लाने के लिए मेरी पुस्तक **अंकों से चुनिए बच्चों के भाग्यशाली नाम** पढ़ी जा सकती है।

भविष्यवाणी का सर्वाधिक विश्वसनीय विज्ञान ज्योतिष है। विज्ञान भी मानने लगा है कि ग्रह-नक्षत्र जन-जीवन पर प्रभाव डालते हैं। ज्योतिष का मूल्य है 'यद ब्रह्मांडे तत्पिंडे'

अर्थात् जिन तत्वों से ब्रह्मांड का निर्माण हुआ है, उन्हीं तत्वों से ब्रह्मांडगत सभी पिण्डों का सृजन हुआ है। इसलिए वराहमिहिर ने लिखा है कि प्राणियों एवं जीव-जन्तुओं के अलावा पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु पर भी ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव पड़ता है। कुमुदनी चन्द्रकिरणों से खिलती है तो सूर्यमुखी सूर्य से। पृथ्वी पर अन्य खगोलिय पिण्डों की तुलना में सूर्य और चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण बलों के फलस्वरुप समुद्र का पानी ऊपर उठता है। ज्वार-भाटे उत्पन्न होते है। चन्द्रमा और सूर्य के सम्मिलित प्रभावों के फलस्वरुप ही पूर्णिमा और अमावस्या के दिन ज्वार अन्य दिनों की तुलना अधिक ऊँचा होता है। यही स्थिति शुक्ल और कृष्ण पक्ष की सप्तमी और अष्टमी के दिन सबसे कम होती है। दूसरे शब्दों में कहें कि चन्द्रमा की कलाओं के साथ ही ज्वार घटता या बढ़ता रहता है।

मानसिक रुप से विक्षिप्त लोगों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया कि पूर्णिमा के दिन ऐसे लोगों की स्थिति विकराल रुप ले लेती है।

सैकड़ों वर्षों के शोध के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया कि सूरज पर प्रत्येक ग्यारह वर्ष में आणविक विस्फोट होता है। इसके प्रभाव का व्यक्ति, देश, वनस्पति आदि पर स्पष्ट अध्ययन किया गया।

स्विस चिकित्सक पैरासिलिसस ने अपने अनुसंधानों से यह सिद्ध किया कि कोई व्यक्ति तब ही बीमार होता है जब उसके और उसके जन्म नक्षत्र के साथ जुड़े हुए ग्रह-नक्षत्रों के बीच तारतम्य टूट जाता है।

पाइथागोरस ने यह सिद्ध किया गया था कि प्रत्येक ग्रह-नक्षत्र अपने निश्चित परिपथ पर चलते हुए एक ध्वनि पैदा करता है। इन सब ग्रह-नक्षत्रों की ध्वनि में एक

ताल मेल है, एक संगीतबद्धता है। प्रत्येक व्यक्ति की इसी प्रकार की संगीतबद्धता और नक्षत्रों की संगीतबद्धता में भी एक व्यवस्था है। जब यह टूटती है तो व्यक्ति प्रभावित होता है।

1950 में कॉस्मिक कैमिस्ट्री नाम की एक नई शाखा पैदा हुई। उसमें इस बात पर बल दिया गया कि पूरा ब्रह्मांड एक शरीर है। यदि एक कण भी प्रभावित होगा तो पूरा ब्रह्मांड तरंगित हो जाएगा।

एक अन्य प्रयोग से यह सिद्ध किया गया कि सूर्य पर आणविक विस्फोट होते है तो मनुष्य का खून भी पतला हो जाता है। आप संभवतः नहीं जानते हों कि व्यक्ति का खून सदैव एक सा रहता है परंतु स्त्रियों का खून उनके मासिक धर्म के दिनों में पतला हो जाता है।

ज्योतिष को लोग अंधविश्वास इसलिए कहते है कि हम उसके पीछे के वैज्ञानिक कारणों को स्पष्ट नहीं कर पाते। हम 'कॉज' और 'एफेक्ट' तथा कार्य और कारण के बीच संबंध तलाश नहीं कर पाते। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। समयाभाव में, धन लोलुपता और अज्ञानतावश हम आगे नहीं बढ़ पा रहे। दरअसल विज्ञान किसी अतिविकसित सभ्यता द्वारा दिया हुआ अविकसित ज्ञान है जिसे हम आगे नहीं बढ़ा पाये। हमारा भविष्य हमारे अतीत से अलग नहीं हो सकता, उससे जुड़ा हुआ होगा। हम कल जो भी होगें, वह आज का ही जोड़ होगा। आज तक हम जो है वह बीते हुए कलों का जोड़ है। भविष्य सदा अतीत से निकलेगा। हमारा आज कल से ही निकलेगा और आने वाला कल आज से। इसलिए जो कल होने वाला है वह आज भी कहीं सूक्ष्म रुप से छुपा है। उसे खोजना ही विज्ञान है।

एक छोटे बीज में उसके पेड़ बन कर फल देने और नष्ट हो जाने का पूरा प्रोग्राम लिखा है। वह अंकुरित होगा, पौध बनेगा, बड़ा होगा, फिर पेड़ बन जाएगा आदि। इसी प्रकार गर्भ से ही बच्चे का पूरा प्रोग्राम निश्चित हो जाता है। यह बात अलग है कि पुरुषार्थ से वह उस प्रोग्राम में थोड़ा बहुत परिवर्तन कर लें।

प्रत्येक ग्रह-नक्षत्र अपने स्वभाव और गुण अनुसार व्यक्ति को प्रभावित करता है यह अकाट्य सत्य है। विज्ञान भी इसको मानता है। वह कहता है कि यह सत्य है कि ग्रह-नक्षत्र व्यक्ति, पशु-पक्षी, जल, वनस्पति, जलवायु आदि को प्रभावित अवश्य करते है, परन्तु यह अभी स्पष्ट नहीं कहा जा सकता कि कोई व्यक्ति विशेष इनके प्रभाव से प्रभावित होगा ही। इस पर निरंतर शोध कार्य चल रहे है और एक दिन विज्ञान को झुकना ही होगा इस सत्य की ओर।

gopalraj

gopal raju